संगीत (तबला) के विषय में Ph. D की उपाधि हेतु संक्षेपिका

Synopsis on

"Saidhantik Tatha Kriyatmak Star Par Table Ka Riyaj : Ek Adhyayan"

''सैध्दांतिक तथा क्रियात्मक स्तर पर तबले का रियाज़ः एक अध्ययन''

डिपार्ट्मेन्ट ओफ तबला

फेकल्टी ओफ परफोर्मिंग आर्ट्स

दि महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ओफ बरोड़ा

शोधार्थी

सचिन दिलीप कचोटे

रजि. नं. FOPA/ 67

रजि. दिनांक 30 / 12 / 2017

मार्गदर्शक

प्रो. डॉ. अजय अष्टपुत्रे

संगीत (तबला) के विषय में Ph. D की उपाधि हेतु संक्षेपिका

Synopsis on

"Saidhantik Tatha Kriyatmak Star Par Table Ka Riyaj : Ek Adhyayan"

''सैध्दांतिक तथा क्रियात्मक स्तर पर तबले का रियाज़ : एक अध्ययन''

1) प्रस्तुत शोध विषय पर शोध प्रबन्ध करने की आवश्यकता :

(Need for Research on this Topic)

हिंदुस्थानी शास्त्रीय संगीत में तबला इस अवनध्द वाद्य ने सर्वश्रेष्ठ लय–तालवाद्य के रूप में गौरव प्राप्त किया है। शास्त्रीय संगीत का मूलभूत तत्व है सौंदर्य और रियाज़, सौंदर्य का महत्वपूर्ण अंग है। तबले की श्रेष्ठता में रियाज़ की उतनी ही महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिससें तबला वाद्य ने अपना एक स्वतंत्र अस्तित्व बना लिया है। यह इस वाद्य की विशेषता है। इसप्रकारसे, इस श्रेष्ठतम वाद्य का रियाज़ भी उतनाही श्रेष्ठ एवं उच्चस्तरीय होना चाहिए। तबले के विविध विद्वानों एवं मूर्धन्य कलाकारोंने अपने रियाज़से तबलावादन प्रस्तुति का संगीतसमाज में हमेशा एक आदर्श रखा है, जो एक प्रेरणास्त्रोत बन चुका है। इसी में, हमें प्रस्तुत विषय की गरीमा एवं वर्तमान में उसका महत्व दिखायी देता है। शोधार्थीने इसी गरीमा को ध्यान में रखते हुए, प्रस्तुत विषय में तबले के रियाज़ पर अपने विचार रखे है, साथही तबले के विद्वानों के अनुभव एवं अभ्यासपूर्ण विचारसे प्रस्तुत विषय पर प्रकाश ड़ाला है।

तबलावादन में रियाज़ की बहोतसी पध्दतियाँ है, लेकिन शोधार्थी के मन में यह सवाल भी उठा की, तबले के रियाज़ की आदर्शपध्दति क्या होनी चाहिए? इसलिए यह शोध प्रबंध लिखने की आवश्यकता महसूस हुई। शोधार्थीने तबलावादन में बौध्दिक एवं शारीरिक रियाज़ पर भी विस्तृत विश्लेषण किया है। इसी के साथ, रियाज़ की प्रत्यक्ष वादन कृती कैसी होनी चाहिए? वादनक्रम क्या होना चाहिए? इन बातों को भी शोधार्थीने उजागर करने का प्रयास किया है।

इस विषय पर शोध प्रबंध लिखने की आवश्यकता इसलिए महसूस कि गयी की अभी तक इस विषयपर शोध प्रबंध नहीं लिखा गया है। अतः मेरे इस प्रबंध से तबले के रियाज़ की बहोतसी मूलभूत एवं महत्वपूर्ण बाते उजागर करने का प्रयास किया गया है। भविष्य में इस शोध प्रबंध से आगामी तबला साधक निश्चितरूपसे लाभान्वित होंगे, इसमें कोई संदेह नही है तथा यहीं इस शोधप्रबंध का एकमात्र प्रामाणिक उद्देश है।

2) परिकल्पना : (Hypothesis)

प्रस्तुत शोधप्रबंधपर काम करते वक्त शोधार्थी ने यह पाया की, तबले के सभी घराने एवं उनकी रियाज़ पध्दती तथा विचारों में काफी असमानताएँ तथा अलगपन हैं, अर्थात रियाज़ पध्दती का यह अलगपन ही उन घरानों की विशेषता बन गयी, जो तबला जगत में नयी पहचान बनी। इसीं विशेषता का महत्व देखते हुए शोधार्थी के मन में यह भी विचार आया की, क्यों न रियाज़ की इन पध्दतीयों के विधायक परिणाम का विचारपूर्वक अध्ययन किया जाए? अर्थात, इस परिणाम के फलस्वरूप रियाज़ पध्दती के अनेक फायदे एवं गैरफायदे याने त्रुटियाँ भी शोधार्थी के नजर में आयी। शोधार्थी ने इसी तात्पर्य के अंतर्गत रियाज़ पध्दती के स्वरूप को उजागर किया है। शोधार्थी ने इस प्रयास को सफल बनाने हेतु तबले के अनेक विद्वानों के प्रत्यक्ष साक्षात्कार लेकर पाद टिप्पणी (फूट नोट्स) के रूप में इसे प्रस्तुत करने का एक कष्ट साध्य तथा प्रामाणिक प्रयास किया है। साथही, विद्वानोंद्वारा लिखित विविध ग्रंथो के आधारपर उन विद्वानो के रियाज़पर विचार भी रखे है। इन सभी के फलस्वरूप, शोधार्थी ने तबले के घराने और विद्वानों के विचारो की रियाज़पध्दति की एक नींव रखने की कोशिश की है, साथही तबलावादन की आदर्श रियाज़ पध्दति पर भी प्रकाश ड़ाला है। तबले के विकास के साथ साथ तबले के रियाज़ में हुआ परिवर्तन तथा सफल रियाज़ की विधिवत एवं विचारपूर्वक जानकारी प्रस्तुत करने की इस परिकल्पना को, शोधार्थी ने अपने शोध–प्रबंध का महत्वपूर्ण चरण माना है, तथा तद्अनुसार अपने नियोजित ध्येय की निश्चितरूपसे प्राप्ति करने का एक सफल प्रयास किया गया है।

3) आँकडा एकत्रित करने की विधि : (Data Collection)

1) तबलावादन से संबंधित अनेक विद्वानोंद्वारा लिखित ग्रंथ उपलब्ध है, लेकिन तबले के रियाज़ के बारे में जानकारी से संबंधित कुछ अल्प पुस्तके प्राप्त थी। जो भी पुस्तक के रूप में जानकारी प्राप्त थी, वो कही प्रमाण में तथ्यों पर आधारित थी, तो कही विषयसे परे थी। ग्रंथकारो ने अपने ग्रंथो में अपने–अपने विचार तथा अनुभव रखे है। प्रस्तुत, तबले के रियाज़ विषय की गरीमा को देखते हुए तबले के विविध घरानों के मूर्धन्य कलाकारों के प्रत्यक्ष साक्षात्कार के रूप में मुख्य विषय के आधार पर जो सामग्री इकट्ठी

हुई, तथा विचारों का जो संकलन हुआ उन्हीं बातों पर प्रस्तुत शोध प्रबंध में पुष्टि की गयी है।

2) इसके साथ ही, कुछ विद्वानोंद्वारा रेडिओ एवं दूरदर्शन पर साक्षात्कार/वार्तालाप के माध्यम से भी तथ्य संकलित करने का प्रयास किया गया है।

3) तबले के रियाज़ के बारे में छपे विभिन्न लेख, स्तंभो के आधार पर विविध विवरणो का संकलन कर के तथ्य प्रस्तुत किये गये है।

4) तबले के रियाज़ के बारे में जो भी प्राप्त पुस्तक थी, उस पर भी दृष्टिपात किया गया है।

5) इंटरनेट, आय–टी टेक्नॉलॉजी के माध्यम से शोध से संबंधित जानकारी का भी पूर्णरूपेण लाभ उठाया गया है।

4) पुनर्विलोकन : (Review of Literature)

प्रस्तुत विषय में संबंधित आँकडे एकत्रित करने के पश्चात सब का पुनर्विलोकन किया गया और त्याज्य आँकडो को छोड़ दिया गया तथा संबंधित तथ्यों का विश्लेषणात्मक रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

5) उद्देश्य : (Objectives)

संगीत क्षेत्र में तबलावाद्य का स्थान हमेशा अग्रणीय है। तबले की बनावट तथा उसका बाज़ इनके वजहसे तबलावाद्य अवनध्द वाद्यों के श्रेणी में श्रेष्ठतम हैं। विविध घराने तथा उनके विचार एवं वादनशैली तबला कला की धरोहर है। तबले के विविध घरानों के विद्वानोंने वादनशैली एवं रियाज़ के बारे में अपने–अपने विचार रखे हैं। विचारों की इसी दृष्टिकोन के आधारभूत, रियाज़ के बारे में विस्तृत विश्लेषण करना, यहि मेरा मुख्य उद्देश है। सैध्दांतिक याने बौध्दिक पक्ष और क्रियात्मक पक्ष के आधारपर तबले के रियाज़ के बारे में महत्वपूर्ण तत्वों को उजागर करने का मेरा एक अत्यंत कठिन प्रयास रहा। तबले की घरानेदार बंदिशे, रियाज़ के लिए उपयुक्त आदर्श बोलपंक्तियाँ, विद्वान कलाकारों एवं गुरूजनों से प्राप्त रियाज़ हेतु मुरक्के, इत्यादि रचनाओं को भी लिपिबध्द किया गया हैं, ताँकि आनेवाले विद्यार्थीयों को उसका लाभ मिल सके।

तबले का सामान्य विद्यार्थी भी रियाज़ को भलिभाँती समझकर जानकारी प्राप्त कर सके तथा उसे अपने चिंतन से आत्मसात भी कर सके, इस हेतु से, तबले की पारंपारिक रियाज़ पध्दति तथा वर्तमान में उसमें हुआ विधायक बदलाव एवं उसके परिणाम संबंधित विस्तृत जानकारी देना, यहि मेरा उद्देश्य है। तबलावादन में प्रतिभावान प्रस्तुति उसके रियाज़ पर ही निर्भर रहती है। सफल कला प्रस्तुति में रियाज़ की भुमिका एहम् होती हैं। प्रस्तुत शोध विषय में तबलावादन कला में रियाज़ की भुमिका स्पष्ट की गयी है। इस प्रकार, तबले के रियाज़ के संदर्भ में सर्वरूपेण स्पष्ट रूपसे विधिवत जानकारी देकर उसका अभ्यासकपूर्वक विस्तृत विश्लेषण करना ही मेरा प्रमुख ध्येय है। अतः रियाज़ के बारे में मेरा यह सर्वांगीण विचार मेरे शोध प्रबंध के माध्यमसे आनेवाले विद्यार्थियों को, शिक्षकों को एवं विभिन्न संगीत संस्थाओं को निश्चित ही लाभान्वित हो, यही मेरा मुख्य उद्देश्य है।

6) शोध कार्यपध्दती एवं योजना : (Research Methodology and planning)

प्रस्तुत शोध प्रबंध, तबले के विविध घरानों के विद्वानों के रियाज़ के बारे में विचारों का संकलन कर प्रस्तुत किया गया है। साथ ही, रियाज़ की विभिन्न पध्दतियों पर भी विवेचन करने का प्रयास किया गया है। इसमें, यह भी प्रयास किया गया है कि इस कार्य पध्दति के अंतर्गत तथ्यों का सरलीकरण विवेचन हो। जैसा की कहाँ जा चुका था कि, तबले के रियाज़ के बारे में विविध विद्वानों का प्रत्यक्ष साक्षात्कार लेकर जो जानकारी प्राप्त हुई है, उसे उजागर करने का मेरा मुख्य उद्देश्य हैं। इसके अतिरिक्त विषय की मांग के अनुसार तथ्यों को जुटाने के लिए तबले से संबंधित कलाकारों एवं गुरूओं का सांगीतिक योगदान तथा उनके अनुभवपूर्ण विचार भी प्रस्तुत किये गये है, साथ ही तबले से सबंधित विविध ग्रंथकारों के ग्रंथों का संबंधित विषयसे संलग्न विचारों का भी स्वागत किया गया है।

7) स्थायी अध्याय : (Chapters)

इस शोध प्रबन्ध को 6 स्थायी अध्याय में विभाजित किया गया हैं।

1) स्वतंत्र तबलावादन, एक रियाज़ की दृष्टिकोन से :

'स्वतंत्र तबलावादन', यह तबलावादन कला की सबसे बड़ी उपलब्धि है। स्वतंत्र तबलावादन तबले के विकास की चरमसीमा है। स्वतंत्र याने एकल तबलावादन का महत्व समझते हुए तबलावादन में रियाज़ का अन्यतम महत्व है। अतः इस अध्याय में स्वतंत्र

तबलावादन की भुमिका रखते हुए स्वतंत्र तबलावादन की परिभाषा, उसमें उपयुक्त वर्ण तथा उसका महत्व, वर्ण एक उपोदयता, उद्देश, आवश्यकता, प्रयोग और सफलता के बारे में चिंतन कर के वर्ण एवं निकास तथा वर्ण एवं रियाज़ पर विभिन्न मुद्दो के आधारपर अपने विचार प्रस्तुत करने का शोधार्थी ने प्रयास किया है।

2) रियाज़ की प्राथमिक जानकारी :

तबलावादन में रियाज़ का अनन्यसाधारण महत्व है। शोधार्थीने रियाज़ का सामान्य अर्थ समझाते हुए विद्वानों के विचारों के आधारपर रियाज़ संज्ञा को परिभाषित करने का प्रयास किया है। रियाज़ एक मुलभुत शब्द है। रियाज़ एवं विकास, प्रणाली, रचना को समझाते हुए रियाज़ एक संतुलन, बैठक, समय एवं स्थान के बारे में शोधार्थी ने विद्वानों के विचार– अनुभव के साथ–साथ अपने विचारों का भी उद्घाटन किया है। रियाज़ के बारे में विद्वानोंद्वारा प्राप्त अमूल्य विचार यह उनके अथक मेहनत का ही फल है, ऐसा शोधार्थी का प्रामाणिक मत है।

3) तबला वादन कला में रियाज़ : एक महत्व :

इस अध्याय में तबला वादन कला में रियाज़ का महत्व दर्शाने का प्रयास किया गया है। इस के अंतर्गत शोधार्थी ने तबलावादन में रियाज़ का महत्व सभी घरानों की दृष्टिकोनसे तथा सर्वांगीण विचार से सामने रखने का प्रयास किया है। साथ ही, रियाज़ की पारंपारिक पध्दतियाँ, रियाज़ एक प्रयोग, आवश्यकता, सफलता इत्यादि प्रमुख तत्वोपर प्रकाश ड़ाला गया है।

4) सैध्दांतिक रियाज :

शोधार्थी का यह मानना है कि, 'सैध्दांतिक रियाज़' यह अध्याय प्रस्तुत शोध प्रबंध की चरमसीमा है। इसीसे, इस अध्याय का महत्व समझ में आता है। प्रस्तुत अध्याय में सैध्दांतिक याने बौध्दिक रियाज़ के बारे में विस्तृत विवेचन करते हुए शोधार्थीने शास्त्र–पक्ष को प्रमुख आधार बताया है। विद्वानोंद्वारा प्राप्त साक्षात्कार के रूप में इस अध्याय में, 'पढंत' पर पूर्णरूपेण सर्वांगीण दृष्टिकोनसे विचार रखने का मेहनती प्रयास शब्दबध्द किया

गया है। शोधार्थीने तबले के विद्वानों के साथ–साथ संगीत की अन्य विधाओं के कलाकार, विद्यार्थी, लेखक तथा श्रोता की दृष्टिकोन से भी तबले के रियाज़ का विचार रखा है।

5) क्रियात्मक रियाज़ :

पिछले अध्याय की तरह इस अध्याय का भी उतनाही महत्व है, ऐसा शोधार्थी का मानना है। तबलावादन यह प्रायोगिक कला हैं। इसीका महत्व रखते हुए शोधार्थीने तबलावादन मे क्रियात्मक पक्ष की विशेषता उजागर करने का प्रयास किया है। स्वतंत्र तबलावादन की विस्तारक्षम रचनाएँ एवं पूर्वसंकल्पित रचनाओं को लिपिबध्द करके उन रचनाओंका रियाज़ में महत्व क्या है? इसका विवेचन करने का अत्यंत कठिन प्रयास किया गया है। स्वतंत्र तबलावादन प्रस्तुति का विधिवत क्रम तथा रियाज़ का परस्परसंबंध इसपर सोदाहरण चर्चा की गयी है। शोधार्थी का मानना है कि, तबले में सर्वांगीण दृष्टिकोन से अभ्यासपूर्वक किया गया रियाज़ ही आदर्श रियाज़ होता है।

6) रियाज़ की आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशे :

विविध घरानों की दृष्टिकोनसे –

तबलावादन प्रस्तुति का महत्व ध्यान में रखते हुए शोधार्थीने प्रस्तुत अध्याय में रियाज़ के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण आदर्श बोलपंक्तियाँ एवं बंदिशों का समावेश करने का प्रयास किया है। विविध घरानों की दृष्टिकोन से रियाज़ के लिए विद्वानोंद्वारा रचित विविध बंदिशे, पारंपारिक रचनाएँ, मुरक्के इत्यादी तथा मूर्धन्य कलाकारोंके साक्षात्कार रूप में प्राप्त अनेक महत्वपूर्ण रचनाओं को उनका महत्व बताते हुए, पं. भातखंडे ताललिपी पध्दति में अभ्यासपूर्ण तरीकेसे लिपिबध्द करने के कठिनतम कार्य का शोधार्थी ने सफल प्रयास किया हैं। शोधार्थी का कथन है कि आदर्श बोलपंक्तियों का रियाज़ ही तबले के सभी अंगो का विचारपूर्वक किया गया सही रियाज़ होता हैं।

8) संदर्भसुचि : (Bibliography)

ग्रंथो के नाम	ग्रंथकार
1. तबला	पं. अरविंद मुलगांवकर
2. इजाज़त	पं. अरविंद मुलगांवकर
3. ताल मार्तण्ड़	पं. सत्यनारायण वशिष्ठ
4. तबला कौमुदी	पं. रामशंकर 'पागलदास'
5. ताल कोश	पं. आचार्य गिरीश्चंद्र श्रीवास्तव
6. लय ताल विचार मंथन	पं. आचार्य गिरीश्चंद्र श्रीवास्तव
7. तबलावादन में निहित सौंदर्य	पं. सुधीर माईणकर
8. तबलावादन कला और शास्त्र	पं. सुधीर माईणकर
9. ताल प्रसून	पं. छोटेलाल मिश्र
10. तबला पुराण	पं. विजयशंकर मिश्र
11. पखावज़ और तबला के घराने एवं परम्पराएँ	डॉ. आबान मिस्त्री
12. तबले का उद्‌भव विकास और वादनशैलियाँ	डॉ. योगमाया शुक्ल
13. ताल शास्त्र का सैध्दान्तिक पक्ष	निशी गुप्ता
14. संगीत चिन्तन	डॉ. अम्बिका कश्यप
15. तबला संचयन	डॉ. एस्. आर. चिश्ती
16. देहली का तबला	पं. उमेश मोघे
17. आठवणींचा डोह	पं. अरविंद मुलगांवकर
18. संगीत, कला आणि शिक्षण	पं. सुधीर माईणकर
19. आवर्तनः भारतीय संगीतातील स्थूलता आणि सूक्ष्मता	पं. सुरेश तलवलकर
20. सर्वांगीण तबला	पं. आमोद दंडगे
21. तालार्णव	पं. आमोद दंडगे

22. गतः स्वतंत्र तबलावादनातील एक सौंदर्यपूर्णप्रकार– लघुशोधनिबंध डॉ. आनंद नायगांवकर
23. तबले के विविध घरानों के मूर्धन्य कलाकारों के साक्षात्कार
24. अ) संगीत कला विहार अंक (संपादकः अ.भा.गां.म.वि.मंडल, मुंबई)
    ब) तालअंक : सं. कार्यालय, हाथरस

25. इंटरनेट अधिकृत वेबसाईट

9) उपसंहार : (Conclusion)

प्रस्तुत शोध प्रबंध में तबले के सैध्दांतिक तथा क्रियात्मक स्तर पर रियाज़ के अंतर्गत पुस्तके तथा मूर्धन्य कलाकारों के साक्षात्कार के जरिए जो भी तथ्य सामने आये है और जो भी निष्कर्ष परिणामस्वरूप उद्‌घटित हुए है उसका विवरण प्रस्तुत करने का शोधार्थी ने प्रयास किया है।